हनुमान चालीसा

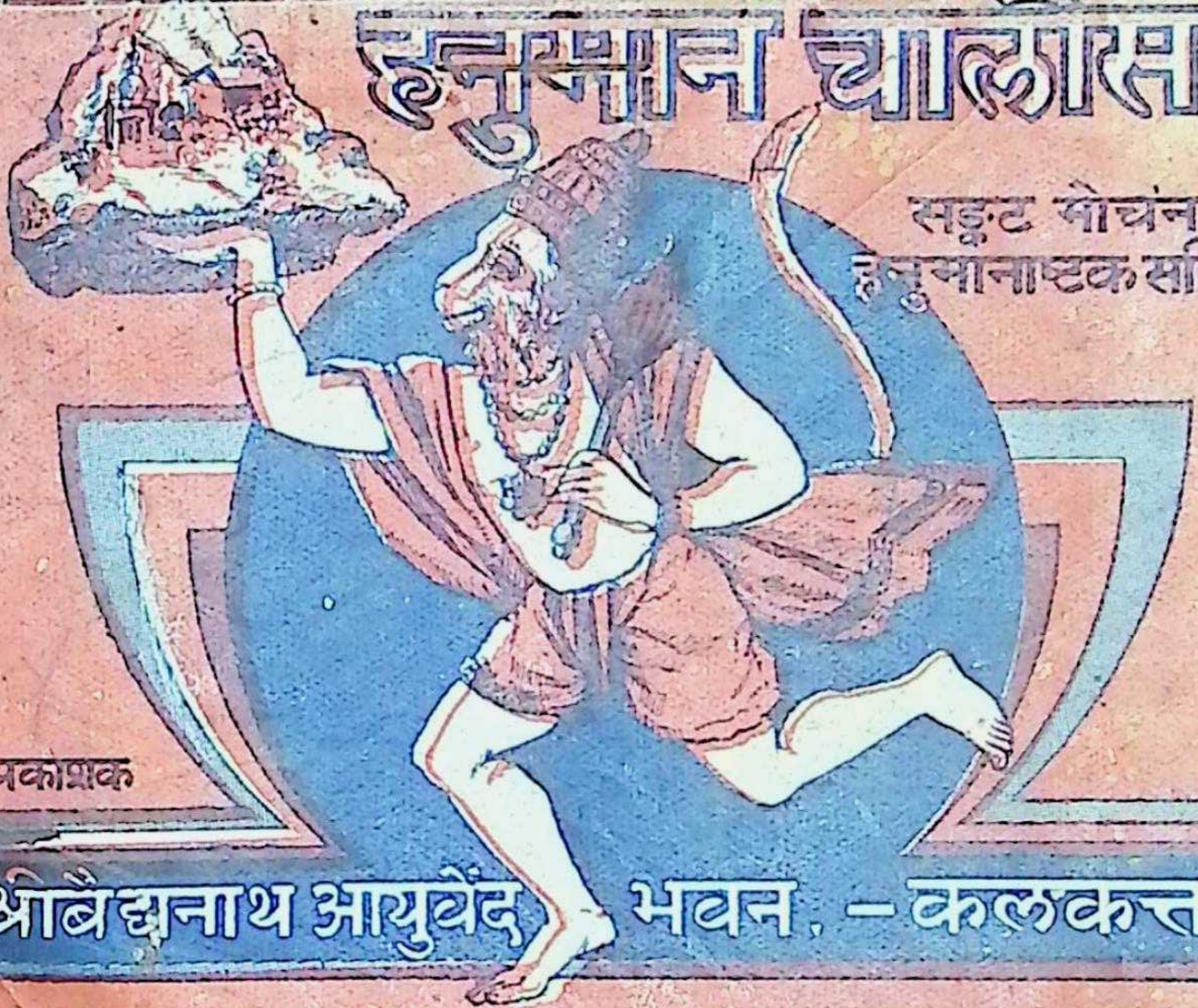

संकट मोचन
हनुमानाष्टक सहित

प्रकाशक

श्रीबैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, – कलकत्ता –

बेकारोंको सच्ची सलाह

आजकल बेकार भाई शहरोंमें नौकरीकी तलाश में बड़ी तकलीफें उठाते हैं। गांठकी पूंजी गंवा देते हैं और अपमान सहते हैं। गांवोंमें कोई रोजगार नहीं रहा। सौ-पचास रुपये लगाकर कोई दूकानदारी की जाय तो वह बड़े दूकानदारोंके मुकाबलेमें नहीं चलती एवं पूंजीसे भी हाथ धोना पड़ता है। और हम सब बेकार भाइयोंको काम नहीं दे सकते, लेकिन हमारी दवाएँ दिहातोंमें घूम-फिरकर बेंचनेसे ऐसे बेकार भाइयोंको अच्छा काम मिल जाता है। नौकरी से हर हालतमें अच्छा रहता है; १५-२० रुपया मासिक तक कोई भी परिश्रमी आदमी घर बैठे कमा सकता है। इसके लिये पूंजी लगानेकी भी दरकार नहीं है। हिन्दुस्तानके बड़े शहरों और कस्बोंमें सब जगह हमारे एजेण्ट हैं, उनसे थोड़ी थोड़ी दवाएँ लेकर बेचिए—अच्छा कमीशन मिलेगा।

एजेंट-श्रीयुत साहु दलबहादुर शेखबहादुर

बनेपा दक्षिणकाली लेन, नेपाल।

॥ श्री हनुमत्त्रयेनमः ॥

॥ श्रीहनुमान चालीसा ॥

दोहा-श्रीगुरु चरण सरोजरज, निजमन मुकुर सुधार ।
वरणौं रघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौं पवन कुमार ।
वलबुधि विद्या देहु मोंहि, हरहु कलेश विकार ॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जय कपीश तिहुँलोक उजागर ॥
रामदूत अतुलित बलधामा ।
अञ्जनि पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमतिके संगी ॥

कंचन वरण विराज सुवेशा ।
कानन कुण्डल कुञ्चित केशा ॥ ४०
हाथ बज्र अरु ध्वजा विराजै ।
कांधे मूंज जनेऊ छाजै ॥
शंकर सुवन केशरी नन्दन ।
तेज प्रताप महा जगवन्दन ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर ।

नारद शारद सहित अहीशा ॥
यम कुबेर दिगपाल जहांते ।
कवि कोविद कहि सकैं कहांते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥

युग सहस्र योजन जो भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेल मुख माहीं।
जलधि लांघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काम जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥
राम दुआरे तुम रखवारे।

होत न आज्ञा बिनु पैठारे ॥
सब सुख लहैं तुम्हारी शरना ।
तुम रक्षक काहू को डरना ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनौं लोक हांकते कांपै ॥
भूत पिचाश निकट नहिं आवे ।
महा बीर जब नाम सुनावे ॥

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा॥
संकट से हनुमान छुड़ावैं।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावैं॥
सब पर राम तपस्वी राजा।
तिनके काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावे।

तासु अमित जीवन फल पावे ॥
चारो युग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥
साधु सन्त के तुम रखवारे ।
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधिके दाता ।
अस वर दीन्ह जानकी माता ॥

राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सादर तुम रघुपतिके दासा ॥
तुम्हरे भजन राम को पावैं ।
जन्म जन्म को दुख बिसरावैं ॥
अन्तकाल रघुपति पुर जाई ।
जहां जन्मि हरिभक्त कहाई ॥
और देवता चित्त न धरई ।

हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥
संकट हटै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरत हनुमत बलबीरा ॥
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करो गुरुदेव की नाईं ॥
यह शत बार पाठ कर जोई ।
छूटे बन्दि महासुख होई ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा ।
होइ सिद्ध साखी गौरीसा ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै दास हृदय महँ डेरा ॥

❁ दोहा ❁

पवन तनय संकट हरण, मंगल मूरति रूप ।
रामलषण सीतासहित, हृदय बसहु सुरभूप ॥

❁ इति हनुमान चालीसा सम्पूर्ण ❁

* श्री हनुमतये नमः *

अथ संकटमोचन हनुमानाष्टक ।

* मत्तगयन्द छन्द *

बाल समय रवि भक्ष्य लियो तब तीनहु लोक भयो अन्धियारो । ताहि सो त्रास भई जगको यह संकट काहु सों जात न टारो । देवन आइ करी बिनती तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो । को नहिं जानत है जगमें कपि संकट मोचन नाम तिहारो ॥१॥

बालिकी त्रास कपीस बसै गिरि जात महा प्रभु पंथ
निहारो ॥ चौंकि महा मुनि श्राप दियो तब चाहिय
कौन उपाय बिचारो ॥ कै द्विज रूप ले आय महा-
प्रभु सो तुम तासुको संकट टारो ॥को०॥२॥ अङ्गद
के संग कीस अनेक गये सिय खोज कपीश उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हमसौं जु बिना सुधि लै इत कौ
पगु धारो ॥ हारि थके तट सिंधु सबै तब लै सिय
को सुधि प्राण उबारो ॥ को नहिं० ॥३॥ रावण त्रास

दई सियको तब रक्षक होकर शोक निवारो ॥ ताहि
व० समय हनुमान महाप्रभु जाय महा रजनीश्चर मारो ॥ मो०
१६ मांगत सीय अशोक सो आगि सो दै प्रभु मुद्रिका १५
शोक निवारो ॥ को नहिं० ॥४॥ बाण लग्यो उर
लक्ष्मणके तब प्राण तज्यो सुत रावण मारो ॥ लै गृह
वैद्य सुषेन समेत तभी गिरि द्रोण सुबीर उपारो ॥
लाय सजीवन हाथ दई तब लक्ष्मण के तुम प्राण
उबारो ॥ को नहिं० ॥५॥ रावण युद्ध अजान कियो

तब नागकी फांस सबै सिर डारो। श्रीरघुनाथ समेत
सबै दल मोह भयो अति संकट भारो। आनि
खगेश तबै हनुमान सों बन्धन काटि के कष्ट
निवारो ॥ को नहिं ॥६॥ बन्धु समेत जबै अहिरावण
लै रघुनाथ पताल सिधारो। देवहिं पूजि भली विधि
सों बलि देहु सबै मिलि मंत्र विचारो ॥ जाय सहाय
भये तबहीं अहिरावण सैन्य समेत संहारो ॥ काज
किये बड़ देवनके तुम बीर महा प्रभु देखि विचारो ॥

॥ को० ॥ ७ ॥ कौन सो संकट मोहि गरीबको जो तुमसो नहिं जात है टारो । बेगि हरो हनुमान महा प्रभु जो कुछ संकट होय हमारो ॥ को नहिं ॥८॥

* दोहा *

लाल देह लाली लसै, अरु धरि लाल लंगूर ।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि शूर ॥
यह अष्टक हनुमानको, बिरचित तुलसीदास ।
गङ्गादास जु प्रेम सों, पढ़े होय दुख नास ॥

॥ इति श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजी श्रीसंकटमोचन हनुमानाष्टक समाप्त ॥

मलेरिया बुखारकी शर्तिया दवा

"बैद्यनाथ प्राणदा"

इससे जूड़ीताप, एकतरा, तिजारी, चौथिया, पारी-का बुखार, तिल्लीका बुखार आदि सब तरहके बुखार शर्तिया अच्छे होते हैं। नाड़ी देखकर दवा देनेकी जरूरत नहीं है और यह भी जाननेकी जरूरत नहीं है कि कौन बुखार है, क्योंकि यह हर तरहके बुखारोंके लिये फायदेमन्द है। चाहे जैसा बुखार हो १-२ खुराकके पीते ही फायदा होता है और २-३ दिनमें बिलकुल छूट जाता है। दुबारा फिर लौटकर बुखार नहीं आता। बुखार छूट जानेके बाद इसकी १-२ शीशी और सेवन कर लेनेसे बुखारकी कमजोरी दूर होती है, भूख बढ़ती है, नया खून तैयार होकर शरीर तन्दु-रुस्त हो जाता है। मूल्य ८ खुराक (४ औंस) की शीशी ॥), ४ खुराक (२ औंस) की शीशी ।-)

बैद्यनाथ तिल्लीकी दवा

पिलही रोगके लिये हमारे यहांकी बनी "बैद्यनाथ तिल्लीकी दवा" रामबाणकी तरह अचूक साबित हुई

है। नई तिल्ली (पिलही) ७ दिनमें और पुरानी १५ दिनमें घर्त लगाकर अच्छी की जा सकती है। इस दवासे काला दस्त होकर पेटकी शिकायत दूर हो जायगी, भूख बढ़ेगी, पेटकी बढ़ी हुई तिल्ली (पिलही) बहुत जल्दी कट जायगी, शरीरमें नया खून तथा बल बढ़ने लगेगा। जल्दीही रोगी भला चंगा और तन्दुरुस्त हो जायगा। इस दवासे तिल्लीके लाखों रोगी अबतक अच्छे हो चुके हैं। एकबार इसकी परीक्षा कर असली दवासे जरूर फायदा उठाइये। मूल्य १६ खुराककी शीशी १)

हर प्रकारके शारीरिक दर्दोंकी अचूक दवा—

बैद्यनाथ मिश्रित चूर्ण

शरीरके चाहे किसी भी भागमें कैसा ही दर्द या पीड़ा क्यों न होती हो इसको एक पुड़िया व्यवहार करते ही दर्दसे बेचैन रोगीको फौरन शान्ति मिलती है। शिर, पेट, पसली तथा वायुबातके दर्दके लिये यह दवा बड़ी अच्छी है।

मूल्य—१६ पुड़ियोंके पाकेटका ॥) आना।

ताक़त, ताज़गीसे भरा हुआ
बैद्यनाथ द्राक्षासव

यह हर तरहकी कमजोरी मिटाता है और सर्दी, जुकाम, खांसी, कब्जियत, सुस्ती, थकावट, हरारत, अनिद्रा आदि शिकायतोंको दूर कर शरीरमें नया खून पैदा करता है। इससे बल वीर्य बढ़ता है, शरीरमें फुर्ती आती है। मन प्रसन्न रहता है, दस्त साफ आता है, रातमें गहरी नींद आती है, भूख खुलकर लगती है। स्वादमें निहायत लज्ज़तदार है।

मूल्य—१ पौण्ड बोतल १) २० औंस बो० १।)

बैद्यनाथ आमलकी रसायन
(धातुपुष्टिकी सर्वोत्तम दवा)

इससे बढ़कर धातुपुष्टिकी दूसरी दवा नहीं है। आमलेके चूर्णको १०० बार ताजे-आमलेके रसमें भावना देकर तमाम धातुपौष्टिक दवाओंके योगसे बनाया जाता है। चरकका यह बड़ाही उत्तम नुश्खा है। इसके तैयार करनेमें हमें बहुत ही परिश्रम, समय और धन खर्च करना पड़ा है। यह धातुपुष्टिकी बड़ी

तेजस्वी दवा है। इससे शीघ्र पतन, वीर्यका पतलापन, पेशाब और टट्टीके साथ वीर्यका जाना, स्वप्नदोष, स्त्री सहवासमें असमर्थता आदि दोष दूर होते हैं। पुरानासे पुराना चाहे कैसा ही प्रमेह क्यों न हो, इसके नियमित सेवनसे जड़से अच्छा हो जाता है। वीर्य गाढ़ा और शरीर पुष्ट होता है, दिमागी ताकत, स्मरण शक्ति बढ़ती है। वीर्यके दोषसे पैदा होनेवाली समस्त शिकायतें और बीमारियां दूर होती हैं। एक बार घरके ऋषिके इस योगका सेवनकर परीक्षा कीजिये।

मूल्य—१० तोलेका डिब्बा १।) रुपया।

वैद्यनाथ अर्क कपूर (हैजेकी मशहूर दवा)

हैजाके शुरु होते ही इसके सेवनेसे जरूर फायदा होता है। दस्त और उल्टी (कै) थोड़ी देरमें बन्द हो जाती है। पेटकी ऐंठन और प्यासकी अधिकता मिट जाती है। इसके अलावा गर्मीके दस्त, पेट दर्द, अजीर्ण, जीका मिचलाना आदिके लिये बड़ा फायदेमन्द है। हैजा जैसी प्राण घातक बीमारीसे बचनेके लिये इसकी एक शीशी हमेशा घरमें रखना चाहिये। मूल्य आधा औंस गोमुखी शीशी ।=) छोटी शीशी।)

बैद्यनाथ अर्क पोदीना सब्ज

बदहजमी और बच्चोंके पेट-सम्बन्धी रोगोंके लिये यह बहुतही लाभदायक है। पेट दर्द, पेट फूलना, डकारें आना, अजीर्ण, अपच, अरुचि, भूख न लगना आदिके लिये सबसे अच्छा है। विशेषकर बच्चोंके हरे-पीले पतले दस्त होना, दूधकी उल्टीकर देना आदिमें अमृतके समान फायदा पहुंचाता है। गृहस्थीमें इसकी एक शीशी घरमें रहनेसे समयपर बड़े काम आती है।

कीमत एक औंस शीशी ॥), आधा औंस गोमुखी शीशी ।=), छोटी शीशी ।) आना।

बैद्यनाथ अनन्त सालसा

किसी भी कारणसे शरीरका खून बिगड़ गया हो, उसके लिये यह बड़ाही चमत्कारी है। खाज, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, शरीरमें चकत्ते होना आदिके लिये फायदेमन्द है। आतशककी बीमारीसे बिगड़े खूनको साफकर शरीरमें नया खून और बल पैदा करता है। एक मास सेवन करनेसे शरीरमें खून बढ़कर चेहरा सुर्ख हो जाता है। मूल्य १६ खुराक १।=)

बैद्यनाथ दादका मलहम

(२४ घण्टेमें शर्तिया फायदा होता है।)

नया या पुराना चाहे जैसा दाद हो २४ घण्टेमें फायदा होता है। बिना जलन और तकलीफके दादको जड़से आराम करता है। इससे अच्छी दाद दिनायकी दूसरी दवा नहीं है। प्रति शीशी ।), छोटी शीशी =) नमूनाकी डिबिया -)

बैद्यनाथ पेनबाम

(शारीरिक दर्दोंका सबसे अच्छा प्रलेप)

शिर, पसली, कमर, गठियाका दर्द, सूजनका दर्द, फोड़े फुन्सीके उठावका दर्द तथा शरीरके किसी भी हिस्सेमें चाहे जैसा दर्द हो इसके लगाते ही दर्द फौरन मिट जाता है। दर्दकी जगहमें इतनी ठण्डक और तरावट आ जाती है कि जितना दर्दके कारण दुःख होता है, उतनाही इसके लगानेसे आराम पहुंचता है। मूल्य बड़ा डिब्बा ।=), छोटी शीशी =) नमूना -)

वैद्यनाथ अमरपारा

(एक शीशीमें घरेलू दवाखाना)

बुखार, खांसी, दमा, हिचकी, कय-दस्त हैजा, आंव पेचिश, बदहजमी, पेट दर्द, संग्रहणी, विषैले जन्तुका डंक मारना, जलना, फटना, दांत दर्द, सिर दर्द आदि अनेक रोगोंकी संसार प्रसिद्ध घरेलू दवा है। इसकी एक शीशी घरमें रखकर अक्सर होनेवाली बीमारियोंसे निश्चिन्त हो जाइये। मूल्य ।=) शीशी।

बै० बालामृत

बच्चोंकी कमजोरीको दूर कर उन्हें तगड़े तन्दुरुस्त और पलवान बनाता है। कब्जियत, कमजोरी, बाढ़का मारा जाना, खूनकी कमी, उल्टी, पतले दस्त और दांत उठनेकी हर तरहकी तकलीफमें बड़ा फायदा पहुंचाता है। स्वादमें मीठा और खुशबूदार है। मूल्य बड़ी शीशी (३२ खुराककी) ॥) आना, छोटी शीशी (१६ खुराककी) ।-)

वैद्यनाथ नेत्रामृत सुरमा

आंखोंकी जाली, आंखोंसे पानी गिरना, धुंध-

[illegible], पित्त [illegible] [illegible] [illegible] आंखोंकी बीमारियां इस छरमेके लगानेसे दूर होती हैं। आंखोंकी ज्योति बढ़ती है, बुढ़ापे तथा आंखोंकी कमजोरीके कारण कम दीखनेकी शिकायत दूर होती है। मूल्य—।)

वैद्यनाथ सूजाक कुठार

(नये और पुराने सूजाककी आजमूदा दवा)

सूजाकवाली स्त्रीके साथ सम्भोग करनेसे पुरुषको और सूजाक वाले पुरुषके साथ सम्भोग करनेसे स्त्रीको यह बीमारी हो जाती है। पहले भयंकर दर्द और जलनके साथ बूंद बूंदसे पेशाब उतरता है, मूत्र नलीके भीतर घाव हो जानेके कारण रोगी पेशाब करते समय बहुत छटपटाता है और बड़ा ही दुख पाता है। धोतीमें सादे या हल्दीके रंग जैसे मवाद (पीव) के दाग लग जाते हैं, बुखार भी आने लगता है। जल्दी अच्छी दवा न करनेसे धीरे धीरे रोगी कमजोर हो जाता है। यह पुराना हो जानेपर जल्दी अच्छा नहीं होता। इसके लिये हमारे यहांकी सूजाक कुठार बड़ी अच्छी दवा है। [illegible]

चाहे नया हो या पुराना १-२ खुराक दवा पीते ही पेशाबका भयंकर दर्द और जलन बिलकुल मिट जाती है। २-३ दिनमें धोतीमें पीबके दाग आना, पेशाबके साथ वीर्यका जाना बन्द हो जाता है। इससे आप गैरण्टीके साथ सूजाकके रोगीको अच्छा कर सकते हैं। फायदा न होतो दाम वापस। मूल्य—२४ खुराककी शीशी १॥)

वैद्यनाथ अशोकारिष्ट

इससे स्त्रियोंका सफेद, नीला और लाल रंगका चाहे जैसा प्रदर हो, अच्छा हो जाता है। प्रदरके कारण बुखारकी हरारत सी रहना, कमर, पेड़ू और शिरमें दर्द होना, हाथ पैरके तलुवों और आंखोंमें जलन होना, मासिक धर्मका ठीक समयपर और ठीक मात्रामें न होना आदि सारी शिकायतें मिट जाती हैं। इससे कमजोर स्त्रियां बलवान और नीरोग हो जाती हैं। शरीरमें नया खून पैदा होता है, जन्दरता बढ़ती है, गर्भाशय पुष्ट होता है। मूल्य—एक पौण्डकी शीशी १), २० औंसकी शीशी ॥)

मनोहर सुगन्धित केश तैल

बद्यनाथ ब्राह्मी तैल—शिर रोगों और याद-दास्तके लिये। ४ औंस शीशी ॥।)

बैद्य० आमला तैल—बालों और माथेके लिये सबसे अच्छा। ४ औंस शीशी ॥।-)

बद्यनाथ केश तैल—बालोंको मुलायम और चित्तको प्रसन्न करता है। १ पौंड बोतल १।=), १० औंस १), ३ औंस ॥=)

बैद्यनाथ सुगन्धित तिल तैल—माथेको ठण्डा रखता है। २२ औंस बो० १।=), १२ औंस बो० ॥।)

बैद्य० गुलाब तैल—गुलाबकी मीठी सुगन्धका खजाना है। २२ औंस बो० १।=), १२ औंस बो० ॥।)

बैद्य० कामिनी बिलास तैल—स्त्रियोंके लिये अत्यन्त मनमोहक ॥-) शीशी।

बैद्य० हिमानी कल्याण तैल—शिरको ठण्डा रखने और शिर दर्दके लिये। बड़ी शी० ॥।) छो० ।=)

विशेष विवरण जाननेके लिये हमारे एजेण्टसे सूचीपत्र लेकर देखिये।

हाजमा, स्वादिष्ट चूर्ण, वटी

वैद्य० लवणभास्कर चूर्ण—अजीर्ण, पतले दस्त, संग्रहणी। २ छ० ।=) १ छ० ≡)

वैद्य० हिंग्वाष्टक चूर्ण—वायुसे पेट दर्दकी अचूक दवा। २ छ० ।=) १ छ० ≡)

वैद्य० नमक सुलेमानी—बदहजमी, पेट दर्द, अरुचि नाशक। मूल्य बड़ी शीशी ।), छोटी शीशी ≡) नमूना -)।

वैद्य० अग्निमुखचूर्ण—अत्यन्त स्वादिष्ट, पाचक। बड़ी शीशी ।) छोटी ≡) नमूना -)।

वैद्य० शोधित हर्रे—अत्यन्त स्वादिस्ट, कब्ज-नाशक ॥) डिब्बा।

वैद्य० स्वादिष्ट मुनक्का—अत्यन्त स्वादिष्ट, दस्तावर। मूल्य २ छटांक शीशी ।≡)

वैद्य० क्षुधाकारी बटी—भूख लगानेकी उत्तम गोलियां। १ छ० शी० ।=)

वैद्य० चित्रकादि वटी—आंव, अजीर्ण, संग्रहणीके लिये। १ छटांक शी० ।=)

हमारी-कुछ अचूक दवाएं

वैद्य० क्लोरोडिन—पेट दर्द, भांव, पेचिश और उल्टी दस्तकी शर्तिया दवा ।=) शीशी ।

वैद्य० पिपरमिन्ट तैल—पेट दर्द, अजीर्णकी उत्तम दवा । बड़ी शीशी ।=) छो० शी० ।)

वैद्य० नेत्ररक्षक—आंखोंके लिये । ।=) शीशी ।

वैद्य० महानारायण तैल—वात रोगोंकी अचूक दवा । २ ब० १।) १ छ० ॥≡)

वैद्य० चन्द्रप्रभाबटी—धातुकी कमजोरी और सब तरहके प्रमेह रोगोंकी रामबाण दवा । २० गोलीकी शीशी १)

वैद्य० कफ मिक्सचर—सब तरहकी कफ खांसीकी दवा । १६ खुराक शीशी ॥=)

वैद्य० जुलावकी गोलियां—॥) शीशी ।

वैद्य० लाक्षादि तैल—जीर्ण ज्वरके लिये । आध पाव शीशी १॥) छोटी शीशी ॥।-)

वैद्य० सप्तगुण तैल—जले, कटे, चोट लगे घावकी उत्तम दवा । बड़ी शीशी।=) छोटी शीशी ।)

उद्देश्य और परिचय

असली आर गुणकारी दवाएँ तैयार करके कम मुनाफेपर वेचना हमारा उद्देश्य है। अपनी असलियत और गुणके कारण हमारे यहांकी दवाएँ आज हिन्दुस्तान भरमें मशहूर हैं।

इसके अध्यक्ष आयुर्वेदोपाध्याय पं० रामनारायणजी शर्मा हैं, जो लोक सेवामें श्रद्धालु, आयुर्वेदके अनुभवी विद्वान और कुशल व्यापारी हैं। गरीब किसान-मजदूर भाइ जो वैद्य डाक्टरोंकी बड़ी बड़ी फीसे नहीं चुका सकते, उनके लिये हमारी दवाएँ बड़े कामकी साबित हुई हैं, क्योंकि ये गुणकारी होनेके साथ ही कीमतमें भी बहुत सस्ती हैं।

१८ वर्षोंसे अपनी गुणकारी दवाओंको लेकर यह कार्यालय रोगोंसे पीड़ित भारतीयोंकी सेवा कर रहा है। हमारे यहां सब रोगोंके लिये तुरन्त फायदा पहुंचानेवाली दवाएँ तैयार होती हैं। आपसे प्रार्थना है कि जरूरत पड़नेपर हमारे यहांकी कोइ भी दवा व्यवहार कर एक बार हमारी दवाओं के गुण और असलियतकी परीक्षा कीजिये।

निवेदक—
मैनेजर

रोज इसी समय बुखार आता था

लेकिन

वैद्यनाथ प्राणदा

से एकदम जाता रहा

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन कलकत्ता

Shri Baidyanath Press, 1, Gupta Lane, Calcutta.